an>

Title: Need to recognize the great contributions made by Swami Dayanand Saraswati.

श्री सत्यपाल सिंह (सम्भल) : माननीय सभापति जी, भारत सरकार द्वारा स्वतंतूता संग्राम समाज में राष्ट्र के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा किए गए योगदान को स्वीकार करने और उनके अद्वितीय प्रयासों की सराहना करने की आवश्यकता है। 1874 में देश में विदेशी राज से मुक्ति का शंखनाद करने वाले स्वामी दयानंद पहले महापुरुष थे। 1875 में कांग्रेस से भी दस वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की जिसका मुख्य अभियान समाज व राष्ट्र को अज्ञान, अंधविश्वास व पाखंड से मुक्त करना, लड़के-लड़कियों के लिए समान संस्कार युक्त अनिवार्य शिक्षा, जन्मगत जाति व्यवस्था को खत्म कर दलितों और शोषितों को गले लगाकर छुआछूत खत्म करना, नारी शिक्षा व विधवा विवाह का समर्थन करना था। महर्षि दयानंद पहले महापुरुष थे जिन्होंने इस बात का भंडाभोड़ किया कि बिना अंग्रेजी जाने कोई व्यक्ति बौद्धिक, तार्किक, वैज्ञानिक सोच रख सकता है तथा समाज, राष्ट्र उत्थान की बातें कर सकता है। भारत की संस्कृति, इतिहास और वैदिक साहित्य के उलटे अर्थ करने वालों पर उन्होंने कुठाराघात करके, प्रभावी चुनौति देकर एक नई दिशा दी। आज देश के पतन का मुख्य कारण वेदों और वैदिक शिक्षा को भुला देना है। वेद सब विद्याओं की पुस्तक है। मानव जाति की अमूल्य धरोहर है तथा इसे पढ़ने का अधिकार सब जाति, धर्म और देश के लोगों को है। आर्य देश के मूल निवासी हैं। आर्य आक्रमण जैसे मुर्दे कृत्रिम, झूठे व देश को बांटने वाले हैं। भारतीय सभ्यता व संस्कृति करोड़ों वर्ष पुरानी है। यह देश कला, कौशल, विज्ञान में दुनिया का सिरमौर रहा है। स्वामी दयानंद ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने कभी भी कहीं भी असत्य से समझौता नहीं किया। उन्होंने प्रतिपादन किया कि सब संप्रदायों, मतों और प्रचलित धर्मों के बीच मूलभूत तत्व एक हैं और सभी मतों और संप्रदायों में कॉमन बातें हैं, वही मानव धर्म के मूल तत्व हैं।

HON. CHAIRPERSON: Please wind up.

श्री सत्यपाल सिंह : स्वामी दयानंद ने देश की एकता, समृद्धि व गौरव के लिए एक भाषा हिंदी, एक धार्मिक ग्रंथ वेद, एक ईश्वर, एक मानव जाति और एक उपासना पद्धति का पुरजोर प्रतिपादन किया। महात्मा गांधी, रविन्द्र नाथ टैगोर, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानंद और अरविंद घोष जैसे महापुरुषों ने उन्हें अपना गुरु माना। यह दुर्भाग्य की बात है कि उनके अप्रतिम योगदान को इस देश के इतिहासकारों और भारत सरकार ने ...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: You cannot speak like this during 'Zero Hour'.

SHRI SATYAPAL SINGH : I will take one minute. It is very important as we have not recongnised his contribution. मैं सरकार से मांग करता हूं, युग पूर्वतक स्वामी दयानंद जैसे अलौकिक व्यक्ति को सम्मान और मान दिया जाए।